जनाब मुस्लिम इब्ने अक़ील की शहादत

जनाब मोहम्मद हैदर साहब

जनाब मुसलिम रसूले खुदा और अली-ए-मुरतज़ा के भतीजे हसनैन के चचा ज़ाद भाई थे। आपके वालिद जनाब अक़ील थें आपकी विलादत बासआदत 32 हि० में मदीनः-ए-मुनव्वरा में हुई थी।

अमीर मुआवीया की मौत के बाद कूफे का हाल बहुत ही बुरा हो गया था। जिसके लिये कूफीयों ने इमाम हुसैन (अ०) की खिदमत में खुतूत भेजने शुरूअ् किये। पहले तो खुतूत की तादाद बहुत कम थी, बाद में ज़ियादा होने लगी। जब खुतूत की तादाद ज़ियादा व हर तायफः व जमाअ्त की तरफ से आने लगे तो इमाम (अ०) ने इन खुतूत पर ग़ौर किया। और इब्न-ए-ज़रीर का बयान है कि उस वक्त कूफे में एक दो घर के अलावःकोई शीआ नहीं था। इसलिये इमाम (अ०) ने अपनी शर्इ ज़िम्मादारी को पूरा करने के लिये अपने चचाज़ाद भाई जनाबे मुस्लिम बिन अक़ील को सफ़ीर बनाकर कूफे रवाना होने का हुक्म दिया। इमाम का हुक्म पाते ही जनाबे मुस्लिम बिन अक़ील रूखसत हो कर मदीने पहुंचे चूंकि इमाम (अ०) 28 रजब सन 60 हि० को मदीने से चल कर मक्के पहुंचे थे। जिस वक़्त आपने यह हुक्म जनाब मुस्लिम को दिया उस वक्त आप मक्के में थे। जनाब मुस्लिम मदीना में सब से पहले रौज़-ए- रसूल पर पहुंचे। ज़ियारत करके घर आये सहर के वक्त अपने दोनों बेटों मुहम्मद और इब्राहीम (जिनकी उर्म 7 साल व 8 साल की थी) और दो राह बरों के साथ रवाना हुवे। रिवायत में है कि यह राहबर क़ैस सैदावी और अब्दुर्र रहमान बिन अब्दुल्लाह थे।

जिस वक्त आपको यह ज़िम्मादारी सौंपी गयी थी उस वक़्त आपकी उम्र 28 साल की थी। आप नेक, परहेज़गार और पुख्ता अक़ीदे वाले मोमिन थे। अहकामे दीन, इरशादाते रसूल और कुरआन के मुताबिक अमल को दुनिया की हर शय से अफ़ज़ल समझते थे। हर तरह की परेशानी को बर्दाशत करते हुवे आप कुफे पहुँचे। वहाँ पर आप जनाब मुख्तार इब्न-ए-अबु अुबैदा सक़फ़ी के मकान पर कियाम फर्मा हुवे। आपकी आमद की खबर बहुत तेज़ी से अवाम में पहुंची और लोग इकठठा होने लगे। आपने इमाम का वह ख़त जो अह्ल-ए-कूफ़ा के नाम था पढ़ कर सुनाया लोगों ने ख़त को सुन कर जांनिसारी का अहद किया। मुकम्मल वफ़ादारी और नुसरत का यक़ीन दिलाया। चन्द दिनों में 18 हज़ार कूफ़ियों ने आप के हाथ पर इमाम (अ०) की ग़ायिबाना बैअ्त कर ली। बाज़ रिवायात में है कि बैअ्त करने वालों की तादाद 30 हज़ार थी।

इसी दौरान यज़ीद ने उबेदुल्लाहे ज़ियाद को लिखा कि कूफे में इमाम (अ०) के एक भाई मुस्लिम इब्न-ए-अक़ील यहां पर हुसैन (अ०) के लिये कुफियों से बैअ्त ले रहे है। इसीलिये तुम वहां जल्द से जल्द पहुंच कर नोअ्मान बिन बशीर से इमारते कूफ़ा का चार्ज ले लो और मुस्लिम का सर मेरे पास भेज दो। इधर जनाब मुस्लिम ने कुफ़े के हालात को इमाम (अ०) के लिये खुशगवार समझकर इमाम को कूफे आने की सलाह भेज दी।

इब्ने ज़ियाद यज़ीद का हुक्म पाते ही कूफे पहुंचा। जनाब मुस्लिम को इब्ने ज़ियाद के आने की खबर मिली तो आप जनाब मुख्तार का घर छोड़ के जनाब हानी बिन उरवह के घर मुन्तक़िल हो गये। इब्ने ज़ियाद ने आपकी कियाम गाह का पता लगवाया। माक़ल ने आकर इब्ने ज़ियाद से जनाब मुस्लिम की क़ियामगाह के बारे में बताया। इब्ने ज़ियाद ने जनाब हानी को बुलवाया और उनसे कहा कि मुस्लिम को हमारे हवाले कर दो। लेकिन जनाब हानी के इन्कार पर 10 साल की उम्र में उनको खम्बे में बन्धवा कर 500 कोड़े लगाने का हुक्म दिया और उनका सर तन से जुदा कर दारूल इमारा पर लटका दिया।

इधर जनाब हानी की गिरफ्तारी और क़त्ल की खबर जनाब मुस्लिम को मिली तो आप जंग के लिये तय्यार हो गये। पहले तो बड़ी तादाद में लोग इकठठा हुवे। मगर नमाजे मग़रिब के बाद तक सब मैदाने कारज़ार से

बाक़िया पेज नं0 44 पर ....

व्यक्ति से हस्बे मरतिब सुलूक करने का जो वसफ रसूल अल्लाह की ज़ात में पाया जाता है वही इमाम हुसैन (अ०) में भी पाया जाता है। यदि मुहम्मद (स०) के जीवन से जनाबे बिलाल की मिसाल पेश की जा सकती है तो इमाम हुसैन अ० का जीवन जनाबे फ़िज़्ज़ा और जनाबे जौन को दुनिया के सामने पेश करता है। आदर्श के सिलसिले में यह बात नहीं भूलना चाहिये कि उसकी असल कसौटी यह नहीं कि हम लोगों से कैसे मिलते हैं, बल्कि यह कि निचले दर्जे के लोगों से हमारा क्या बर्ताव है। इमाम हुसैन (अ०) ने हमेशा गुलामों से अच्छे से अच्छा सुलूक किया। जनाबे जौन से जो सुलूक किया उसकी तो मिसाल मिलना भी कठिन है।

बहादुरीः-

चौथी बात दिलेरी है सही मानों में केवल ''खुदापरस्त'' हो दिलेर हो सकता है। इमाम हुसैन (अ०) एक मानी में अपने भाई इमाम हसन (अ०) से भी अधिक दिलेर थे यही दिलेरी उन्हें मैदाने कर्बला में लेगई यह वह दिलेरी थी जो बद्र में पहले देखी जा चुकी थी । इसी दिलेरी और बहादुरी को फारसी के कवि ने इस प्रकार पेश किया है।

न मर्द अस्त आं ब नज़दीके खिरद मंद
कि बा पीले दमां पैकार जूयद
बले मर्द अस्त आं अज़ रूए तहक़ीक
कि चूँ खश्म आयदश बातिल न गोयद

इमाम हुसैन (अ०) दिलेरी के इस मेयार पर पूरे उतरते हैं।

ऐ सियासतदानों ! इमाम हुसैन (अ०) से शिक्षा लो वरना यह पशिचमी जल तुमहें तबाह कर देगा।

ऐ धार्मिक लोगों हुसैन (अ०) के बताये हुए रास्ते पर चलो। ज़बानी दावों से कुछ न होगा।

इस बात को मैं शेर की ज़बान में यूँ पेश कर सकता हूँ।

''हुसैनी शान के सजदे हैं सजदे मेरी नज़रों में
ज़बीं फर्साईयों का नाम सजदा हो नहीं सकता''

ऐ मुसन्नेफ़ीने ऐखलाक़ ! कभी सर-व-गरीबां होकर सोचों कि निचले तबके से तुम्हारा सलूक कैसा है। बराबर वालों के साथ बर्ताव से इसकी जांच न होगी हयाते हुसैन (अ०) का मुतालेआ करो और बार बार करो।

ऐ दिलेरी के दावेदारों कभी तुमने अपने नफस से जंग की अगर नहीं तो मैदाने कारज़ार में कितने ही करिश्मे दिखाओ तुम सही मानों में दिलेर हो ही नहीं सकते। हुसैन इब्ने अली (अ०) को सलाम हो जो मुदब्बिर होकर हक परस्त था।

सलाम हुसैन इब्ने अली (अ०) को जो दिलेर होकर मुनकसिर मिजाज था।

सलाम उस हुसैन पर जिसने इस्लाम को दाखली खतरों से बचा लिया और सलाम उस हुसैन इब्ने अली (अ०) को जिसने अपनी जान देकर हर धर्म को मनुष्यता का सन्देश दिया।

पेज नं0 41 का शेष..........

खिसक चुके थे। अब सिर्फ जनाब मुस्लिम यक्कः व तनहा थे। फिर भी आपने हिम्मत न हारी जंग की। जनाब मुस्लिम कूफे से निकल जाना चाहते थे मगर रास्ता न मिलने से आप कूफे में रात भर भटकते रहे। आखिर एक औरत तौआं के यहां क़याम फर्माया। पिसरे तौआ् ने मांजे से छुप कर दुनिया की लालच में यह बात इब्ने ज़ियाद को बता दी कि मुस्लिम उसी के घर में है। तीन हज़ार फौजियों ने जनाब मुस्लिम को घेर लिया। फिर भी अली-ए-मुरतज़ा के भतीजे ने वह जौहर दिखाये कि फौजे भागने लगी।

ग़रज़ कि जब किसी भी तरह से काबू न पाया जा सका तो आपको धोखे से एक ख़स पोश गढ़े में गिरा दिया गया और गिरफ्तार करके इब्ने ज़ियाद के सामने पेश किया गया। उसने आप का सर तन से जुदा करने का हुक्म दिया। पहले तो आप को दारूल इमारा से धकेल दिया गया जब आप ज़मीन पर तशरीफ लाये तो आपके मुंह से कलिमः-ए-शहादतैन निकला। बादे शहादत आपका सर तन से जुदा कर दिया गया और पैरों में रससियाँ बांध कर आपको कूफे की गली कूचों में फिराया गया। इतना ही नहीं बल्कि आपका सर दारूल इमारा पर लटकाया गया।

आपकी शहादत 9 ज़िलहिज्जः 60 हि० को हुई। आपकी शहादत के बाद आपके दोनों फरज़न्दों को भी शहीद कर दिया गया।